एम.ए. जैनोलॉजी (द्वितीय वर्ष)
जैन आगम

1. Who is non-violent according to acharanga? Describe it.

आचारांग के अनुसार अहिंसक कौन है, वर्णन कीजिए।

2. Write an essay on rebirth.

पुनर्जन्म पर एक सारगर्भित निबन्ध लिखिए।

3. What are the views of different philosophers concerning the creation of this world?

विश्व संरचना के संदर्भ में विभिन्न दार्शनिकों के मन्तव्य को लिखिए।

4. Explain any three ideologies out of many ideologies described in Sutra Kritang and analysize them in Jain view.

सूत्रकृतांग में आये प्रमुख वादों में से किन्हीं तीन वादों का स्वरूप बताते हुए जैन दृष्टि से उनकी समीक्षा करें?

5. Explain humility in content of Uttaradhyayana.

उत्तराध्ययन के आधार पर विनय के स्वरूप का वर्णन करें।

6. Explain in detail the relation of soul and matters.

जीव और पुद्गल के सम्बन्ध को विस्तार से समझाइये।

7. Write a critical o

verview of Dasavaikalika?

दशवैकालिक पर समालोचनात्मक निबन्ध लिखिये।

8. Write the introduction of Samayasar based on contents in detail?

समयसार का परिचय विषयवस्तु के आधार पर विस्तार से लिखिये।

अनेकान्त, नय, निक्षेप और स्याद्वाद

1. सिद्धसेन दिवाकर के अनुसार अनेकान्त की व्यापकता का विश्लेषण करें।
Explain the wide scope of Anekanta as mentioned by Siddhasen.
2. नय के स्वरूप को बताते हुए उनके विभिन्न भेदों पर प्रकाश डालिए।
Explain the nature and types of Naya.
3. सप्तभंगों का आगम–कालीन रूप स्पष्ट करें।
Clarify the Seven Bhangas in agamic period.
4. अर्थपर्याय और व्यंजन पर्याय को परिभाषित करते हुए सिद्धसेन के विचारों को स्पष्ट करें।
Define and explain Artha Paryaya and Vyanjana Paryaya as per Siddhasens view.
5. अनेकान्त के उद्भव एवं विकास पर निबन्ध लिखें।
Write an essay on origin and development of Anekant.
6. भंग सात ही क्यों? कम या अधिक क्यों नहीं विष्लेषण करें।
Why only seven bhanga? Why not less or more? Analyse it.
7. स्याद्वाद एवं अनेकान्तवाद का उद्भव और विकास का क्रम समझाएं।
Explain origin & development of syadvada and anekantavada.
8. सप्तभंगी के स्वरूप एवं प्रकारों पर विस्तार से प्रकाश डालें।
Explain Nature and types of Saptabhangi.

जैन धर्म दर्शन और भारतीय धर्म दर्शन

1. अपरिग्रह को परिभाषित करते हुए जैन, बौद्ध, योग, वेदान्त में अपरिग्रह का क्या स्वरूप है। तुलनात्मक दृष्टि से प्रकाश डालें।
Defining non-possessiveness. Compare this concept in reference to Jain, buddha, Yoga, Vedanta with characteristics.
2. जैन, बौद्ध, मीमांसक और वेदान्त दर्शन के अनुसार अहिंसा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
Throw light on forms of non-violence acording to Jainism, Budhism and Vedanta philosophy.
3. सांख्य एवं योग दर्शन में मोक्ष का स्वरूप बताते हुए जैन दर्शन में मोक्ष के स्वरूप को स्पष्ट करें।
Explain forms of Salvation in Sankhya and Yoga Philosophy with reference to form of salvation in Jain Philosophy.
4. बौद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन में सत् की अवधारणा को स्पष्ट करें।
Explain the concept of Sat (Being) as per buddhism and Jainism.
5. व्रत को परिभाषित करते हुए जैन बौद्ध योगदर्शन में व्रत का क्या स्वरूप को विस्तार से समझाइए।
Define Vrat? Explain the forms of vrat in Jainism Budhism and Yogic Philosophy.
6. कर्म के स्वरूप को बताते हुए विभिन्न दर्शनों के सन्दर्भ में कर्म की अवस्था को स्पष्ट करें।
Explain Nature of karma with reference to its stages in different philosophies.
7. अविद्या क्या है? जैन तथा बौद्ध दर्शन के अनुसार अविद्या का स्वरूप बताइए।
What is Avidya? Explain the forms of Avidya according to Jainism and Budhism?
8. वेदान्त एवं जैनदर्शन के वस्तु विषयक चिन्तन को अनेकान्त के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट करें।
Explain the concept of reality as given in vedanta and Jain Philosophy in context of Anekanta?
9. वेदान्त दर्शन एवं जैन दर्शन में सत् की अवधारणा को स्पष्ट करें।
Explain Forms of Salvation in Sankhya and Yoga Philosophy with reference to the form of salvation in Jain Philosophy.

जैन धर्म–दर्शन एवं भारतीयेतर धर्म–दर्शन

1. अरस्तू एवं जैन दर्शन के द्रव्य एवं आकार की अवधारणा के साम्य एवं वैषम्य को स्पष्ट करें।
Write the concept of substance and form in Aristotle & Jain Philosophy narrating similarities & differences.
2. लाइबनीज के चिदणुवाद की जैन आत्मवाद से तुलना कीजिए।
Give comparison between the monad of Libenitze and Jain Soul.
3. डेकार्ट और जैन दर्शन के आत्मा सम्बन्धी विचारों का तुलनात्मक विवेचन करें।
Give a comparative description of Soul according to Descartes & Jainism.
4. काण्ट के कारणता सिद्धान्त की तुलना जैन कारणता से कीजिए।
Compare the principle of causality of Kant & Jain Philosophy.
5. कारणता– ह्यूम एवं जैन दर्शन
Causality in Jain and Hume
6. मुक्तिमार्ग, नीतिशास्त्र–जैनधर्म और ईंसाई धर्म
Path of Salvation, Ethics-In Jain religion and Christanity.
7. आर्थिक विषमता एवं अपरिग्रह।
Economic disparity and Non-possessiveness
8. लोकतन्त्र एवं अनेकान्त
Democracy and Anekant.
9. डेकार्ट और जैन दर्शन के द्रव्य सम्बन्धी विचारों का तुलनात्मक विवेकचन करें।
Give a comparative description of substance according to Descartes & Jainism
10. ह्यूम के कारणता सिद्धान्त की तुलना जैन कारणता से कीजिए।
Compare the principle of causality of Hume & Jain Philosophy.
11. द्रव्य (स्पिनोजा एवं जेन) Substance (Sprinoza & Jain)
12. पूर्वस्थापित सामंजस्य (re-established Harmoni) लाइब्नीज